International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 11 Issue 4, July-August, 2023, Impact Factor: 7.326

लिंग के सापेक्ष अभिभावक किशोर संबंधो पर अध्ययन

रेनू बाला सिंह[1], डॉ. माधवी पांडे[2]

[1]रिसर्च स्कॉलर, गृह विज्ञान विभाग, मानसरोवर ग्लोबल यूनिवर्सिटी, भोपाल
[2]सहायक प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग, मानसरोवर ग्लोबल यूनिवर्सिटी, भोपाल

सार

जब बच्चो के आचरण में मापदंडा के गठन की बात आती है तो परिवार भी नैतिक व्यवहार में लैंगिक पक्षपात से अछूते नहीं रहते। अध्ययन की योजना निम्नलिखत उद्देश्यों को ध्यान में रखकर बनाई गई है रू लिंग के सापेक्ष अभिभावक–किशोर संबंधो का आकलन करना। सूचना एकत्रित करने के दौरान कक्षा 7,9 व 11 में उपस्थित सभी छात्र–छात्राओं को प्रश्नावली दी गई (निजी विद्यालयों के 300 छात्र–छात्राओं और सरकारी विद्यालयों के 300 छात्र–छात्राओं को) सम्पूर्ण नमूने (600 किशोर) लिया गया.

इस अध्ययन के लिये फैमिली अवेलेबिलिटी एण्ड कोहेसिवनेस इवेलुएशन (एफ ए सी ई) स्केल प्ट, ओल्सन का उपयोग किया गयाण संपूर्ण विश्लेषण के आधार पर, किशोरों के अपने अभिभावकों से संबंधों की गुणवत्ता बालिकाओं में बेहतर होती है। (संतुलित संबंधों, संप्रेषण तथा संतुष्टि के आधार पर, बालिकाओं को उच्च श्रेणी में रखा गया है जबकि उलझे हुए, कठोर तथा अस्त–व्यस्त की असंतुलित के क्षेत्र में उन्हें निम्न श्रेणी में रखा गया है।)

परिचय

किशोरों के आचरण और विकल्पों के चयन के लिए, किशोरावस्था में पारिवार की परिवर्तनीय भूमिका को ध्यान में रखे बगैर, घर के वातावरण और अभिभावकों कों ज्यादा जरुरी माना जाता है। बढते लड़के या लड़की में पारिवार की अभिवर्ती बहुत ज्यादा जरुरी हो जाती है। मार्गदर्शन, बातचीत, और यहाँ तक कि संघर्ष के माध्यम से भी किशोर अपने आचरण और चालचलन को ही आकार नहीं देते वरन अपने अभिभावकों तथा अपने भाई बहनों से जुड़ाव को भी पुनःपरिभाषित करते है। किशोर अपने जीवन में अभिभावकों को बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं, और अभिभावकों के अनुपस्थित होने की अपेक्षा उनकी उपस्थिति में अधिक संतष्ट महसूस करते हैं (मोंतेमयोर और ब्रोव्न्ली, 1987)। वे किशोर जिन के सम्बन्ध अपने माता पिता से अच्छे है उनसे यह कम अपेक्षित रहता है की वो किसी तरह का गलत जोखिम उठाएंगे, जैसे कि धुम्रपान, शराब का सेवन या लड़ाई–झगडा।

विभिन्न नतीजो से कोई ऐसा स्पष्ट प्रमाण नहीं मिला है कि इन रिश्तों में पारस्परिक जुड़ाव या तनाव क्यों पैदा होता हैं? परन्तु इसके उलट कुछ चर, किशोरों के इन अंतर–सम्बन्धी रिश्तो की तरफ इशारा करते है।

किशोरावस्था के दौरान बनने वाले सम्बन्धों में लैंगिक आधार पर होने वाले अंतर

जब बच्चो के आचरण में मापदंडा के गठन की बात आती है तो परिवार भी नैतिक व्यवहार में लैंगिक पक्षपात से अछूते नहीं रहते। परिवार के पुरूष सदस्यों के मुकाबले किशोरों के रिश्ते परिवार की महिला सदस्यों से कम सकारात्मक होते हैं। अपनी माताओं के साथ किशोरों के रिश्तों में असहमति तथा विवाद दोनों अधिक मात्रा में सम्मिलित होते है (सतेंबेर्ग 1990)। जो चीज़ लडको के लिए स्वीकार्य और संतोषजनक होती है वह लड़कियों के लिए वर्जित होती हैं। और इससे भी अधिक खेदजनक यह है कि

लड़कियों को यह परोक्ष रूप से नहीं वरन बहुत साफ शब्दों में बताया जाता है कि उनका व्यवहार अपने भाइयो से कैसे अलग हो। कई परिवारों में देखा जाता है कि एक बच्चे का ख़ास तरह का अनचाहा व्यवहार बिना किसी प्रतिकूल प्रतिक्रिया के अभिभावकों द्वारा अनदेखा कर दिया जाता है, परन्तु दूसरे बच्चे द्वारा किया गया वैसा ही व्यवहार, असंतोष जागृत कर देता है। कुछ बच्चे अपने अभिभावकों के व्यवहार तथा चाल–चलन की तुलना अपने दोस्तों के अभिभावकों से करते है। इसके परिणामस्वरूप या तो वो अपने अभिभावकों के प्रति सकारात्मक रूप से सवेदंशील हो जाते है या उनसे क्रोधित हो जाते है।

शोध के उद्देश्य

अध्ययन की योजना निम्नलिखत उद्देश्यों को ध्यान में रखकर बनाई गई है।

1. **लिंग के सापेक्ष अभिभावक–किशोर संबंधो** का आकलन करना।

शोध पद्धति

यह अध्ययन विद्यालयों में किया गया है जो कि मिर्ज़ापुर के शहरी क्षेत्र में कक्षा छः से बारह तक के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करता है। विद्यालयों की सूचि में से 20 विद्यालयों का दैव निर्दर्शन तरीके से चयन किया गया। अध्ययन के लिये नमूने के रूप में कक्षा 7, 9 तथा 11 के विद्यार्थियों का चयन किया गया। सूचना एकत्रित करने के दौरान कक्षा 7,9 व 11 में उपस्थित सभी छात्र–छात्राओं को प्रश्नावली दी गई (निजी विद्यालयों के 300 छात्र–छात्राओं और सरकारी विद्यालयों के 300 छात्र–छात्राओं को) सम्पूर्ण नमूने (600 किशोर) लिया गया.

इस अध्ययन के लिये फैमिली अवेलेबिलिटी एण्ड कोहेसिवनेस इवेलुएशन (एफ ए सी ई) स्केल प्ट, ओल्सन का उपयोग किया गया

परिणाम एवं परिचर्चा

निम्नलिखित सारणी एक आसंग सारणी है जिसमें प्रतिक्रियाकर्ताओं के लिंग के आधार पर संबंधों की गुणवत्ता (अनुकूलनशीलता व संसक्ति) के वर्गीकरण के **काई**–स्क्वायर मान दर्शित हैं।

सारणी 4.2.1 संबंधों की गुणवत्ता तथा प्रतिक्रियाकर्ताओं के लिंग के लिए बारंबारता, प्रतिशतता (कोष्टक में दी गई है) तथा X^2 मान

संबंधों के आयाम	लिंग	क्षीण संबंधित	संबंधित	अत्यधिक संबंधित	X^2 मान	कि
संसक्ति	बालिकाएं	27 ;9द्ध	84 ;28द्ध	189 ;63द्ध	34ण्91′	2
	बालक	39 ;13द्ध	144 ;48द्ध	117 ;39द्ध		
लचीलापन	बालिकाएं	30 ;10द्ध	129 ;43द्ध	141 ;47द्ध	11ण्98′	2
	बालक	57 ;19द्ध	132 ;44द्ध	111 ;37द्ध		

संबंधों के आयाम	लिंग	अत्यधिक निम्न	निम्न	मध्यम	उच्च	अत्यधिक उच्च	X^2मान	कि

उलझे हुए	बालिकाएं	21 ;7द्ध	72 ;24द्ध	102 ;34द्ध	69 ;23द्ध	36 ;12द्ध	19ण्75′	4
	बालक	15 ;5द्ध	75 ;25द्ध	81 ;27द्ध	75 ;25द्ध	54 ;18द्ध		
अस्त व्यस्त	बालिकाएं	21 ;7द्ध	45 ;15द्ध	111 ;37द्ध	78 ;26द्ध	45 ;15द्ध	9ण्61′	4
	बालक	21 ;7द्ध	63 ;21द्ध	105 ;35द्ध	75 ;25द्ध	36 ;12द्ध		
क ठोर	बालिकाएं	33 ;11द्ध	69 ;23द्ध	75 ;25द्ध	87 ;29द्ध	36 ;12द्ध	32ण्95′	4
	बालक	24 ;8द्ध	51 ;17	87 ;29द्ध	78 ;26द्ध	60 ;20द्ध		
विरक्त	बालिकाएं	51 ;17द्ध	78 ;26द्ध	81 ;27द्ध	57 ;19द्ध	33 ;11द्ध	9ण्86′	4
	बालक	39 ;13द्ध	90 ;30द्ध	81 ;27द्ध	60 ;20द्ध	30 ;10द्ध		
संप्रेषण	बालिकाएं	30 ;10द्ध	24 ;8द्ध	66 ;22द्ध	96 ;32द्ध	84 ;28द्ध	54ण्30′	4
	बालक	33 ;11द्ध	42 ;14द्ध	84 ;28द्ध	93 ;31द्ध	48 ;16द्ध		
संतुष्टि	बालिकाएं	21 ;7द्ध	48 ;16द्ध	93 ;31द्ध	75 ;25द्ध	63 ;21द्ध	103ण्31′	4
	बालक	45 ;15द्ध	78 ;26द्ध	84 ;28द्ध	54 ;18द्ध	39 ;13द्ध		

सारणी 4.2.1 से यह पता चलता है कि χ^2 का मान बहुत महत्वपूर्ण है। अभिभावक–बालक/बालिका संबंधों के सभी आयामों के लिए लक्षणों की स्वतंत्रता की परिकल्पना को निरस्त किया गया माना जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बच्चों के साथ संबंधों की गुणवत्ता के निर्धारण के दौरान परिवारों में लैंगिक भेदभाव व्याप्त रहता है। बालकों और बालिकाओं के अपने अभिभावकों से संबंध एक जैसे नहीं होते। जैसा कि उपरोक्त सारिणी में देखा जा सकता है, बालकों की तुलना में बालिकाएं अपने अभिभावकों से अधिक लचीला व्यवहार करती हैं। क्योंकि ये दोनों आयाम परिवार के संबंधों के संतुलन को दर्शाते हैं, अतः इससे यह साफ हो जाता है की बालकों की अपेक्षा बालिकाओं व उनके अभिभावकों के संबंध अधिक घनिष्ठ में संतुलित होते हैं।

उपरोक्त सारणी में स्पष्ट है कि अधिकतर बालक उच्च श्रेणी में आते हैं। बालक अपने परिवार की तुलना में बाहरी सदस्यों के साथ ज्यादा सहज महसूस करते हैं। ऐसा इसलिए भी हो सकता है क्योंकि परिवार में लगभग हर स्थिति के लिए एक नियम तक होता है; और इन नियमों को तोड़ने पर बालकों को बालिकाओं की तुलना में अधिक कठोर दंड मिलता है। इसके विपरीत बालिकाएं अपने परिवार के साथ बहुत अधिक समय बिताती हैं और उन्हें यह शिकायत भी रहती है कि किसी भी कार्य या गतिविधि के लिए परिवार में जिम्मेदारियां स्पष्ट नहीं होती।

यह आश्चर्य की बात भी है कि बालिकाओं व उनके परिवार के संबंध संतुलित व असंतुलित दोनों प्रकार के होते हैं। यह भी एक विशेषता है कि परिवार के साथ संप्रेषण और एक दूसरे को समझने की गुणवत्ता बालिकाओं के मामले में ज्यादा अच्छी होती है। संप्रेषण और संतुष्टि के लिए अधिकतर बालिकाओं का स्तर उच्च ही होता है। बालिकाएं सदस्यों के आपस में बातचीत करने, और परिवार के साथ घनिष्ठता रखती हैं, उनसे बातें साझा करती हैं, व परिवार में उनका ख्याल भी बहुत अच्छे तरीके से रखा जाता है।

संपूर्ण विश्लेषण के आधार पर, किशोरों के अपने अभिभावकों से संबंधों की गुणवत्ता बालिकाओं में बेहतर होती है। (संतुलित संबंधों, संप्रेषण तथा संतुष्टि के आधार पर, बालिकाओं को उच्च श्रेणी में रखा गया है जबकि उलझे हुए, कठोर तथा अस्त–व्यस्त की असंतुलित के क्षेत्र में उन्हें निम्न श्रेणी में रखा गया है।)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- स्मेटाना, जे.जी., अबेर्नेथी, ए., एंड हैरिस, ए.(2000). एडोलसेंट–पैरेंट इंटरेक्शन्स इन मिडिल–क्लास अफ्रीकन अमेरिकन फैमिलीजःलोंगीटूडिनल चेंज एंड कांटेक्सटुअल वेरिएशनस. जर्नल ऑफ फैमिली साइकोलॉजी, 14(3), 458.
- एडम्स, आर., एंड लौर्सेन, बी.(2001). द आर्गेनाइजेशन एंड डायनामिक्स ऑफ एडोलसेंट कांफ्लिक्ट्स विथ पेरेंट्स एंड फ्रेंड्स. जर्नल ऑफ मैरिज एंड फैमिली, 63(1), 97–110.
- जॉनसन, एच.डी., लवोइए,जे.सी.,एंड महोंये, एम. (2001). इन्टरपैरेंटल कांफ्लिक्ट्स एंड फैमिली कोहसायन प्रेड़ीक्टर्स ऑफ लोनेलिनेस, सोशल एंग्जायटी, एंड सोशल अवॉयडेंस इन लेट एडोलेस्संस. जर्नल ऑफ एडोलसेंट रिसर्च, 16(3), 304–318.
- ब्युइस्त, के.एल., डेकोविऊ, एम., मीउस,डब्लु., एंड वेन अकेन, एम.ए.(2002). डेवलपमेंटल पैटर्नस इन एडोलैसैंट अटैचमेंट टू मदर ,फादर एंड सब्लिंग. जर्नल ऑफ यूथ एंड एडोलेस्संस, 31(3), 167–176.
- फिन्ने,जे.एस., एंड ओनग, ए.डी.(2002). एडोलसेंट–पैरेंट डीसग्रीमेंटस एंड लाइफ सेटिसफेकशन इन फैमिलीज फ्रॉम विएटनामिस–एंड यूरोपियन–अमेरिकन बैकग्राउंडस. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिहेवियर्ल डेवलपमेंट, 26(6),556–561.
- शेक,डी.टी.(2002). पेरेंटिंग कैरेक्टरिस्टिकस एंड पेरेंटिंग–एडोलसेंट कनफ्लिक्ट अ लोंगिट्यूडिनल स्टडी इन द चायनिस कल्चर .जर्नल ऑफ फैमिली इश्यूज,23(2), 189–208.